रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी० के० कालेज डुमरॉव

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

निरघन दिन दिन होत है,
भारत भुव सब भाँति।
ताहिं बचाइ न कोउ सकत
निज भुज बुधि बल काँति॥

अचरज होत तुमहुँ सम गोरे बाजत कारे।
तासों कारे करि' शब्दहु पर हैं वारे॥

भयो भूमि भारत में महा भयंकर भारत।
भए बीरबल सकल सुभट एकहि संग गारत॥

आजु लौं रही अनेक भाँति धीर धारि कै।
पै न मात मोहिं बैठनो सु मौन मारि कै॥

बगियान बसन्त बसेरो कियो
बसिए तेहि त्यागि तपाइए ना।
दिन काम कुतूहल के जो बने,
तिन बीच वियोग बुलाइए ना॥
'घन प्रेम' बढ़ाय के प्रेम, अहो!
बिथा बारि वृथा बरसाइए ना।
चित चैत की चाँदनी चाह भरी,
चरचा चलिबे की चलाइए ना॥

धन्य भूमि भारत सब रतननि की उपजावनि।

चहहु सोचहु निज कल्यान,
तौ सब मिलि भारत संतान।
जपो निरन्तर एक जबान, हिंदी हिन्दू हिन्दुस्तान
प्रतापनारायण मिश्र

तबहि लख्यौ जहँ रहो,
एक दिन कंचन बरसत
तहँ चौथाई जन रूखी
रोटिहुँ को तरसत।
प्रतापनारायणमिश्र

पढ़ि कमाय कीन्हों कहा,
हरे देश कलेस।
जैसे कंता घर रहे,
तैसे रहे विदेस॥
प्रतापनारायण मिश्र

जग जानै अंगलिश हमैं वाणी वस्त्वहि जोय।
मिटे बदन कर श्याम रंग जन्म सुफल तब होय॥
प्रतापनारायण मिश्र

नौन तेल लकरी घासहु पर टिक्स लगे जहं।
चना चिरौंजी मोल मिलै जहं दीन प्रजा कहं॥
प्रतापनारायण मिश्र

अभी देखिए क्या दशा देश की हो।
बदलता है रंग आसमां कैसे कैसे!

प्रतापनारायणमिश्र

कौन करे जो नहिं कसकत सुनि
विपति बाल विधवन की।

प्रतापनारायणमिश्र

विधवा विलपैं नित धेनु कटैं
कोउ लागत हाय गोहार नहीं॥

प्रतापनारायण मिश्र

निज भाषा बोलहु लिखहु पढ़हु गुनहु सब लोग।
करहु सकल विषयन विषै निज भाषा उपजोग॥

श्रीधर पाठक

वंदनीय वह देश जहाँ के देशी निज अभिमानी हों।
बन्धवता में बँधे परस्पर परता के अज्ञानी हो॥

श्रीधर पाठक

जगत है सच्चा तनिक न कच्चा समझो बच्चा
इसका भेद।

श्रीधर पाठक।

लिखो न करो लेखनी बंद।
श्रीधर सम सब कवि स्वच्छंद॥

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी विभाग डी.के. कॉलेज
डुमराँव बक्सर बिहार